

भारत का व्यापार घाटा बढ़कर 13 अरब डॉलर तक पहुँचा

संदर्भ

वाणज्य मंत्रालय द्वारा जारी आँकड़ों के अनुसार जून 2017 में भारत का व्यापार घाटा 12.95 अरब डॉलर पर पहुँच गया है, जबकि जून 2016 में वस्तुओं का व्यापार घाटा 8.1 अरब डॉलर था।

प्रमुख बढि

- 2017 में वस्तुओं का निर्यात 4.39% बढ़ा जबकि आयात में 19% की बढ़ोतरी हुई।
- जून में आयात किये जाने वाले प्रमुख कमोडिटी समूह में उच्च वृद्धि देखी गई, जिनमें पेट्रोलियम, कच्चे तेल और उत्पाद (12.04%), इलेक्ट्रॉनिक सामान (24.22%), मोती, कीमती और अर्द्ध-मूल्यवान पत्थर (86.31%), मशीनरी, वदियुत और गैर-वदियुत सामान (7.02%) और सोने में (102.99%) की वृद्धि दर्ज की गई।
- जून माह में तेल का आयात 12.04 प्रतिशत बढ़कर 8.12 अरब डॉलर हो गया है।
- आर्थिक मामलों के जानकारों कहना है कि भारत का निर्यात एक मज़बूत प्रवृत्ति दिखाने के बाद मूक वृद्धि का संकेत दे रहा है। हालाँकि इंजीनियरिंग क्षेत्र ने जून में भी अपनी जीवंतता कायम रखी है।
- भारतीय वित्तीय बाज़ार में वैश्विक तरलता के भरपूर बहाव से भारतीय निर्यात की प्रतस्पर्धा पर एक प्रकार की काली छाया पड़ती देखि रही है।

व्यापार घाटा : अर्थ एवं कारण

- व्यापार घाटे का अर्थ निर्यात की तुलना में आयात की अधिकता से है। जब किसी राष्ट्र का आयात उसके निर्यात से अधिक होता है, तो वह व्यापार घाटे की स्थिति में चला जाता है।
- ज़ाहिर है जब आयात अधिक होगा तो वदेशी मुद्रा, विशेष रूप से डॉलर, में भुगतान होने के कारण देश में वदेशी मुद्रा (डॉलर) की कमी होगी। जब वदेशी मुद्रा में भुगतान होती है, तो उसकी मांग भी बढ़ती और रुपया उसके मुकाबले कमज़ोर होता है।
- रुपए के कमज़ोर होने से उसकी कीमत में गिरावट आती है। ऐसी परिस्थिति में आयातकों को वदेशों से माल के आयात के लिये अधिक कीमत चुकानी पड़ती है। इस तरह आयात महँगा हो जाता है। इसके विपरीत निर्यातकों को फायदा होता है।
- गौरतलब है कि भारत में कच्चे तेल की मांग का एक बड़ा भाग आयात से पूरा किया जाता है। कच्चे तेल का अंतरराष्ट्रीय व्यापार डॉलर में होता है।
- जब अंतरराष्ट्रीय बाज़ार में कच्चे तेल की कीमतें बढ़ती हैं तो उसका प्रभाव भारत के व्यापार घाटे पर पड़ता है।
- इसी तरह भारत में सोने का आयात भी बड़े पैमाने पर किया जाता है जिसके लिये भी डॉलर की आवश्यकता पड़ती है।